मूल-शान्ति-विधिः

भाषा-टीका-सहितः

M.Katyayana

टीकाकारः

पं० श्री रामबिहारी मिश्रः, व्याकरणशास्त्री

प्रकाशकः

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

✆ 2392543, 2392471

संवत् २०५४]

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

[मूल्य- ४/-

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मूल-शान्ति-विधिः

भाषाटीका-सहितः

प्रथमतः शतच्छिद्रेण सप्तविंशतिच्छिद्रेण वा करकेण यजमानः सपत्नीकः सबालकः स्नानं कुर्यात्। तस्मिन्नेव करके सप्तधान्यं, सप्तमृत्तिकां, शतौषधिमूलं, पञ्चरत्नानि, सप्तविंशतितीर्थजलानि च निक्षिप्य। *सप्तधान्यानि यथा* **-श्यामाक-यव-गोधूम-मुद्ग-माष-प्रियङ्गवः। धान्यानि च समाख्यातः व्रीहयः सप्त सूरिभिः।।** *अथ सप्तमृत्तिका-* **अश्वस्थानाद् गजस्थानाद् वल्मीकात् संगमात् ह्रदात् । राजद्वाराच्च**

२

पहले यजमान अपनी पत्नी तथा बालक के साथ सौ छेद अथवा सत्ताइस छेदवाले कलशे के जल से स्नान करे। पश्चात् उसी कलशे में सप्तधान्य अर्थात् सात प्रकार के अन्न (साँवा १, यव २, गेहूँ ३, मूँग ४, उड़द ५, ककुनी (टाँगुन) ६, धान्य ७), छोड़े, सप्तमृत्तिका-घोड़शाल १, हाथीशाल २,

गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत्।। शतौषध्यभावे यथा परिहारः- शतौषधीनां दुष्प्राप्तौ क्षिपेदेकां शतावरीम्। *अथ पञ्चरत्नानि-* **माणिक्यं मौक्तिकं हेमं प्रबालं रजतादिकम्। पञ्चरत्नांगमित्येतत् सर्वशान्तिकरं परम्।। सप्तविंशतिवृक्षाणां पत्राणि करके निक्षिप्य, वंशपात्रोपरि न्यस्त-सच्छिद्रकलशोदकैः। कम्बलान्तर्हितं कृत्वा स्नापयेद् दम्पतीं शिशुम्।। स्नानान्ते कलशस्थापनं सङ्कल्पं च कुर्यात् -अद्येत्यादि देशकालौ स्मृत्वा, गोत्र-नामोच्चारणं कृत्वा, ममाऽमुकनक्षत्रजातस्य बालकस्य गण्डजनित-दोषोपशान्त्यर्थम्, अमुकशान्तिमहं करिष्ये। ततो यज्वा आचार्यादीन्**

३

बेमुवट ३, संगम ४, तालाब ५, राजा के द्वार ६ तथा गोशाले ७, की मिट्टी छोड़े, शतौषधि के अभाव में शतावरी नाम की जड़ी छोड़े। पञ्चरत्न (माणिक १, मोती २, सोना ३, मूँगा ४, चाँदी ५) छोड़े फिर सत्ताइस प्रकार के वृक्षों के पत्ते छोड़े, पश्चात् जल से भर दे। इसके बाद बाँस के सूप अथवा डलिया में कम्बल का टुकड़ा बिछाकर इस छिद्र वाले कलशे को स्थापित कर, इसके जल से बालक सहित पति-पत्नी के ऊपर अभिषेक करे। इस अभिषेक-स्नान के बाद अछिद्र कलश का स्थापन कर संकल्प करे। अमुक नक्षत्र के स्थान पर उस नक्षत्र का नाम लेवे, जिस नक्षत्र में बालक का जन्म हुआ हो, इसके

मू. शा. पञ्च-सप्त वा ब्राह्मणान् वृणुयात्। ततः स्वस्तिपुण्याहवाचनं विधाय, पूर्वस्यां दिशि कलशस्थापनं कृत्वा, तत्र गणेशादीन् संपूज्य, ईशानादि-चतुष्कोणेषु चत्वारो मृण्मयान् कलशान् धृत्वा, तत्र प्रथमकलशे ब्रह्मपूजनं, द्वितीये विष्णुपूजनं, तृतीये रुद्रपूजनं, चतुर्थे इन्द्रपूजनम्। स्वर्णमय-मूलपुरुषपूजनं, ततो नवग्रहपूजनं लोकपालानाम्, दिक्पालानाम्, अधिदेवतायाः, प्रत्यधिदेवतायाः पूजनम्। *अथ पूजनविधिः*– प्रथमतः स्वस्त्ययनम्, 'भूरसी'ति मन्त्रेण भूमिस्पर्शनम्,

भा. टी. ४

बाद पाँच अथवा सात ब्राह्मणों का शक्ति के अनुसार वरण करे। इसके बाद स्वस्ति तथा पुण्याहवाचन कर पूर्व दिशा में स्थापित कलश के समीप गणेश आदि देवताओं का पूजन करे। इसके बाद ईशान आदि चारों कोणों पर चार कलश रखे, प्रथम कलश पर ब्रह्मा की, दूसरे पर विष्णु की, तीसरे पर रुद्र की और चौथे कलश पर इन्द्र की पूजा करे। इसके बाद सुवर्ण के बने हुए मूल पुरुष का पूजन करे। पश्चात् नवग्रह पूजा तथा लोकपाल, दिक्पाल, अधिदेवता एवं प्रत्यधिदेवता आदि का पूजन करे। क्रमशः पूजन विधि–पहले स्वस्त्ययन, फिर 'भूरसि' इस मन्त्र से भूमि का

मू. शा. 'मानस्तोके'इति मन्त्रेण नमस्कारः, 'आजिघ्र' इति मंत्रेण कलशस्थापनम्। 'सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा' इति मंत्रेण जलं, 'याः फलिनी'ति मन्त्रेण पूगीफलम्, 'हिरण्यगर्भे'ति मन्त्रेण द्रव्यम्, 'अम्बेऽम्बिके अम्बालिके'इति मन्त्रेण पल्लवम्, 'धान्यमसी'ति मन्त्रेण धान्यम्, 'अग्निर्ज्योति'रिति मन्त्रेण दीपम्। *अथ प्रतिज्ञासङ्कल्पं कुर्यात्।* तत्र 'गणानां त्वे'ति मन्त्रेण गणपतिपूजनं, गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूल-पूगीफल-द्रव्यैर्गणपतिं पूजयेत्। 'श्रीश्च ते' इति मन्त्रेण गन्धादीनां गौरीपूजनं, पश्चान्नवग्रह-लोकपाल-दिक्पालानाम्, अधिदेवतायाश्च पूजनम्, तत्पश्चात् चतुर्षु कलशेषु क्रमेण

भा. टी. ५

स्पर्श करे, 'मानस्तोके' इस मन्त्र से नमस्कार, 'आजिघ्र' इस मन्त्र से कलशस्थापन, 'सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा' इस मन्त्र से जल छोड़े, 'याः फलिनी' इस मन्त्र से सोपाड़ी छोड़े, 'हिरण्यगर्भ' इस मन्त्र से द्रव्य चढ़ावे, 'अम्बे अम्बिके' इस मन्त्र से पल्लव छोड़े, 'धान्यमसि' इस मन्त्र से धान्य छोड़े, 'अग्निर्ज्योति' इस मन्त्र से दीपक रखे। इसके बाद प्रतिज्ञा-संकल्प करे। पश्चात् 'गणानां त्वा' इस मन्त्र से गणपति का गन्ध, पुष्प, धूप, दीपादि से पूजन करे। 'श्रीश्च ते' इस मन्त्र से गौरी देवी का पूजन करे। इसके बाद नवग्रह,

ब्रह्मादिदेवतापूजनम्– तत्र प्रथमकलशे 'ब्रह्म-यज्ञानमि'ति मन्त्रेण ब्रह्मपूजनम्। द्वितीयकलशे 'विष्णोरराटे'ति मन्त्रेण विष्णुपूजनम्। तृतीयकलशे 'नमः शम्भवाये'ति मन्त्रेण रुद्रपूजनम्। चतुर्थकलशे 'त्रातारमिन्द्र' इति मन्त्रेणेन्द्रपूजनम्। तत्र प्रथमकलशोपरि आम्रपल्लवं धान्यदीपं, द्वितीयकलशे पञ्चामृतं तीर्थजलं सप्तधान्यं सुवर्णं च क्षिपेत्, तृतीयकलशे सप्तमृत्तिकां, एवं चतुर्थकलशोपरि प्लक्षपल्लवं, धान्यदीपं, गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूल-फल-द्रव्याणि दद्यात्। एवं प्रकारेण

लोकपाल, दिक्पाल एवं अधिदेवताओं का पूजन करे। पश्चात् चारों कलशों पर ब्रह्मादि देवताओं का पूजन करे, प्रथम कलश पर 'ब्रह्मयज्ञानम्' इस मन्त्र से ब्रह्मा का पूजन करे। दूसरे कलश पर 'विष्णोरराट' इस मन्त्र से विष्णु का पूजन करे। तीसरे कलश पर 'नमः शम्भवाय' इस मन्त्र से रुद्र की पूजा करे, चौथे कलश पर 'त्रातारमिन्द्र' इस मन्त्र से इन्द्र की पूजा करे। यह स्मरण रहे कि, प्रथम कलश में आम्र का पल्लव छोड़े, धान्य पर दीपक रखे। द्वितीय कलश में पञ्चामृत, तीर्थ जल तथा सप्तधान्य एवं सुवर्ण छोड़े। तृतीय कलश में सप्तमृत्तिका छोड़े तथा चौथे कलश में पञ्चरत्न,बड़, पीपल, पलाश, पाकड़ तथा गूलर के पल्लव छोड़े तथा जामुन आदि वृक्षों की छाल एवं सत्ताइस कुओं का जल छोड़े फिर गन्ध, पुष्पादि से

चतुःकलशपूजनम्। ततो होमः। *तत्राऽऽचार्य्यवरणम्।* अव्यांगावयवंशान्तं सदाचारैः प्रतिष्ठितम्। आचार्यं वरयेत्तत्र वस्त्रैराभरणैरपि।। स्वस्ति-वाचनमादौ च कृत्वा सर्षपमन्त्रणम्। प्राच्यादौ मन्त्रपठनाद्रक्षा-कङ्कणबन्धनम्।। तत्र वाक्यम्–पूर्ववद्देशे-काल-वाक्यानन्तरं मम नवकुमारस्य जन्मसमयेऽमुकनक्षत्र-जनित-गण्डान्तदोषोपशमनार्थं होमकर्मणि अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्द्रव्या-ऽक्षत-वस्त्र-यज्ञोपवीत-नारिकेलफल-ताम्बूल-कुण्डल-मुद्रिकादिभिराचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। 'वृतोऽस्मी'त्याचार्यो ब्रूयात्। 'यथाविहितं कर्म कुरु' इति यजमानः।'करवाणी'त्याचार्यः,द्वौमिलित्वा, 'व्रतेन दीक्षामि'तिमन्त्रं पठेताम्।

पूजन करे। इसके बाद स्वस्तिवाचन, सर्षप मन्त्रण, दिग्रक्षण तथा कंकण बन्धन कर 'मम नवकुमारस्य (कुमारिकाया वा)' इससे लेकर 'त्वामहं वृणे' तक पढ़कर आचार्य का वरण करे। 'वृतोऽस्मि' ऐसा आचार्य कहे। 'यथाविहितं कर्म कुरु' यजमान कहे, 'करूँगा' ऐसा आचार्य कहें फिर दोनों मिलकर 'व्रतेन दीक्षाम्' इस मंत्र को पढ़ें।

तत्राऽऽचार्यो हस्तमात्रचतुरस्रवेदिकोपरि अग्निं स्थापयेत्। तत्राऽऽचार्यः प्रतिज्ञां कुर्यात्। 'अद्ये'त्यादि वाक्यं कृत्वा, गण्डदोषशमनार्थं होमकर्माहं करिष्ये। तत्राचार्यो देवताभिध्यानं कुर्यात्। तत्र प्रजापतिम्, अग्निं, सोममग्निं, स्विष्टकृतमाज्येनाऽहं यक्ष्ये। अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्, आदौ ब्रह्माणं सम्पूज्य, ततो द्रव्याऽक्षत-ताम्बूल-वासोयुगान्यादाय, ॐ अद्येत्यादि वाक्यं कृत्वा, मम यजमानस्याऽभिनवकुमारस्य जन्मसमये अमुकनक्षत्र-जनित-गण्डान्तदोष-शमनार्थं होमकर्मणि अमुक-गोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्द्रव्याक्षतवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे। 'वृतोऽस्मी'ति प्रतिवचनम्। यथाविहितं कर्म कुरु, करोमीति।

इसके बाद आचार्य एक हाथ लम्बी-चौड़ी वेदी का निर्माण कर स्थापन प्रकार से अग्नि की स्थापना कराकर यह प्रतिज्ञा करे कि मैं गण्डदोष शान्ति के लिये हवन करने जा रहा हूँ। पश्चात् आचार्य देवताओं का ध्यान करे और कहे कि, मैं प्रजापति, अग्नि तथा सोम के लिए स्विष्टकृत् होम घी के द्वारा करूँगा। इसके बाद अग्नि के दक्षिण तरफ ब्रह्मा का आसन बिछाकर, जिसे ब्रह्मा बनाना हो उनका पूजन कर वरण सामग्री द्वारा 'मम यजमानस्य' से लेकर 'ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे' तक पढ़ कर ब्रह्मा का

पश्येति यजमानः, पश्यामीति ब्रह्मा ब्रूयात्। एवं प्रकारेण समिदाज्य-तिल-चरूणां होमार्थमाचार्यं वृणुयात्। ब्रह्मासनोपरि ब्रह्माणमुपवेश्य, प्रणीतासनोपरि प्रणीतापात्रं निधाय, तदुपरि कुशैराच्छाद्य, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य, ततः परिस्तरणम्, एकाशीतिदर्भदलानि वामहस्ते गृहीत्वा, तेषां चतुर्भागान् कृत्वा, प्रथमं भागमादाय आग्नेयादीशानान्तं, द्वितीयं भागमादाय ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं, तृतीयं भागमादाय नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं, चतुर्थं भागमादाय, अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं, ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं त्रीणि दर्भदलानि, पवित्रकरणार्थं साग्रमन्तर्गर्भं

वरण करे। 'वृतोऽस्मि' ऐसा ब्रह्मा कहें। 'यथाविहितं कर्म कुरु' ऐसा यजमान कहे। 'करूँगा' ऐसा ब्रह्मा कहें। इसके बाद ब्रह्मा को ब्रह्मासन पर बैठाकर तथा प्रणीता पात्र को प्रणीता-आसन पर रख उसे कुशाओं से ढँक दे। फिर ब्रह्मा का मुख देखकर परिस्तरण करे, इक्यासी कुशा को बायें हाथ में लेकर उनका चार भाग कर प्रथम भाग को लेकर अग्नि कोण से पूर्वाग्र ईशान कोण तक बिछा दे। दूसरे भाग को लेकर ब्रह्मा से अग्नि पर्यन्त बिछा दे। तृतीय भाग को लेकर नैर्ऋत्यकोण से वायव्य कोण तक बिछा दे। चतुर्थ भाग को लेकर अग्नि से प्रणीता पर्यन्त बिछा दे। इसके बाद अग्नि के उत्तर अथवा पश्चिम

मू. शा. कुशपत्रद्वयं, प्रोक्षणीपात्रम्, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, सम्मार्जनकुशाः, उपयमनकुशाः, समिधस्तिस्रः, खदिरो हस्तमात्रः, स्रुवः, आज्यं, गव्यं, षट्पञ्चाशदधिकमुष्टिशतद्वयावच्छिन्न-तण्डुलपूर्णपात्रं, दक्षिणा, वरा गौः, पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वदिशि क्रमेणाऽऽसादनम्, ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्वा, तान् अपास्य, सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय, अनामिकांगुष्ठाभ्यामुत्तराग्रं पवित्रं गृहीत्वा,त्रिरुत्पवनं,ततः प्रोक्षणीपात्रं वामकरे निधाय, अनामिकां-ऽगुष्ठाभ्यां गृहीतपवित्रेण तज्जलं किञ्चित् त्रिरुत्क्षिप्य, प्रणीतोदकेन भा. टी. १०

दिशा में पवित्र छेदन के लिए तीन कुशा रख दे, उसके पूर्व भाग में पवित्रकरणार्थ दो कुशाओं को और रख दे। फिर पवित्रछेदन कुशा के पूर्व दिशा में क्रमशः प्रोक्षणी पात्र, आज्यस्थाली, पाँच सम्मार्जन कुशा, सात उपयमन कुशा, तीन समिधा, एक हाथ का खदिर, स्रुवा, घी, पञ्चगव्य, दो सौ छप्पन मुट्ठी चावलों से भरा पूर्ण पात्र, दक्षिणा, दूध देनेवाली गौ का आसादन करे (रखे)। इसके बाद पवित्र छेदन करे। दो कुशा के पत्र पर तीन कुश रखे, दो के मूल से लपेटना, लपेट कर छेदन करना, दो को ग्रहण कर, तीन को छोड़ दे। फिर सपवित्र कर से प्रणीता के जल को तीन बार प्रोक्षणी में छोड़े, फिर अनामिका तथा अँगूठा से पवित्री को लेकर

मू. शा. प्रोक्षणीमभिषिच्य, प्रोक्षणीजलेनाऽऽसादितवस्तुसिञ्चनम्। अग्नि-प्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात्। ततः आज्यस्थाल्यामाज्यं निरूप्याऽधिश्रयणं, ततः कुशं प्रज्वाल्याऽऽज्यस्योपरि प्रदक्षिणेन भ्रामयित्वा वह्नौ प्रक्षिपेत्। स्रुवं त्रिः प्रतप्य, सम्मार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं सम्मृज्य,प्रोक्षण्युदकेनाऽभ्युक्ष्य, पुनस्त्रिः प्रतप्य, दक्षिणतो निदध्यात्। ततः आज्यमग्नेः प्रदक्षिणं कारयित्वा, पुनस्तत्र स्थापयेत्। भा. टी. ११

तीन बार प्रोक्षणी के जल को उछाले फिर प्रोक्षणी पात्र को बायें हाथ में लेकर उसके जल को तीन बार ऊपर उछाले। प्रणीता के जल से प्रोक्षणी पात्र का अभिसिंचन करे, फिर प्रोक्षणी के जल से आसादित (रखी) हुई वस्तुओं का सिंचन करे। अग्नि और प्रणीता पात्र के मध्य में प्रोक्षणी पात्र को रख दे। घी के पात्र में घी को रख आग पर चढ़ा दे, जलती हुई लकड़ी को घी के चारों तरफ घुमा दे, स्रुवा को सेंक दे, सम्मार्जन कुशा से सम्मार्जन करे, कुशा के अग्रभाग से नीचे तथा मूल भाग से बाहर स्रुवा का सम्मार्जन करे। फिर प्रणीता को जल से अभ्युक्षण कर सम्मार्जन कुशा को अग्नि में छोड़कर स्रुवा को पुनः तपा दक्षिण भाग में रख दे। घी को अग्नि से उतार प्रणीता के पश्चिम भाग में रख दे। अनामिका तथा अँगूठा से प्रोक्षणी

प्रोक्षणीवदुत्पवनम्,अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनम्, पुनः प्रोक्षणी-वदुत्पवनम्। उत्थायोपयमनकुशान् वामहस्ते धृत्वा, प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा,तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः प्रक्षिपेत्। तत उपविश्य, सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाऽग्निं पर्य्युक्ष्य, प्रणीतापात्रोपरि पवित्रे धृत्वा, पातितदक्षिणजानुर्ब्रह्मणान्वारब्धः, समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणा-ऽऽज्याहुतीं जुहुयात्। तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवाऽवस्थितं हुतशेषं प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षिपेत्। प्रथमं कुशत्रयादिकमादाय– ॐ अद्येत्यादि वाक्यं कृत्वा,

की भाँति घी का भी उत्पवन करे। और घी को अच्छी तरह देखे, यदि कोई खर आदि पड़ गया हो तो उसे निकाल दे। फिर प्रोक्षणी का उत्पवन करे, इसके बाद घी को अग्नि के पश्चिम भाग में रख उपयमन कुशा को बायें हाथ में ले खड़ा होकर दक्षिण हाथ में तीनों समिधाओं को ले घी में डुबो मौन हो अग्नि में छोड़ दे। फिर बैठकर सपवित्र कर से प्रोक्षणी के जल-द्वारा ईशान कोण से प्रारम्भ कर क्रमशः ईशान कोण तक अग्नि का पर्युक्षण करे, पवित्र को प्रणीता में रख दे, दाहिने पैर को मोड़कर अपने आसन से ब्रह्मा पर्यन्त कुश के द्वारा सम्बन्धित हो आघार तथा आज्य भाग संज्ञक घी की आहुति करे। स्रुवा के हुत शेष घी को प्रोक्षणी पात्र में गिराता जाय। इसके बाद कुश, अक्षत एवं जल

अमुकशर्मणो यजमानस्याऽभिनवकुमारस्य जन्मसमये अमुकनक्षत्र-जनितगण्डदोषोपशमनार्थं समिदाज्य-तिल-चरूणां प्रत्येकमष्टोत्तर-सहस्रमष्टोत्तरशतं वा तत्तन्मन्त्रेण ब्राह्मणद्वारा हवनमहं कारयिष्ये, इति सङ्कल्पः। 'ॐ नमः प्रजापतये स्वाहा' इत्यादि होमानन्तरं सूर्यादिनवग्रह-ग्रामदेवतान्तर्धृत-समित्तिल-चरूणां प्रत्येकमेकामाहुतिं दद्यात्। यन्नक्षत्रं तदूदैवतस्मरणपूर्वकं होमं कुर्यात्। ॐ अश्विनोर्भैषज्येन तेजसा ब्रह्मवर्चसायाऽभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्याया-न्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि

लेकर मूल में लिखित संकल्प के आधार से संकल्प करे कि, अमुक नक्षत्र जनित गण्ड दोष के उपशमन के लिये समिधा, घी, तिल आदि द्वारा सूर्यादि ग्रहों एवं ग्राम देवताओं के लिये यह हवन करता हूँ। यह ध्यान रहे कि, ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय न मम। ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम। यह आज्यभाग संज्ञक हवन के बाद ब्रह्मा से और अपने पास तक के कुश-सम्बन्ध को हटा ले। फिर तत्-तत् ग्रहों के मंत्र से प्रत्येक ग्रह को ८ अथवा २८ आहुतियाँ दे। इसके बाद गण्डान्त वाले नक्षत्रों तथा उनके अधिदेवताओं एवं प्रत्यधिदेवताओं तथा उनसे सम्बन्धित अन्य देवताओं के लिए १०८, २८ अथवा ८ आहुति

मू. शा. भा. टी.

स्वाहा।। इति अश्विनीनक्षत्रमन्त्रः। ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः स्वाहा।। इति मघानक्षत्रमन्त्रः। ॐ एष ते निर्ऋते भागस्तञ्जुषस्व स्वाहाऽग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः परः सद्भ्यः स्वाहा। यमनेत्रेभ्यो दक्षिणासद्भ्यः स्वाहा, विश्वेदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चाशद्भ्यः स्वाहा, मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वामनेत्रेभ्यो वा देवेभ्यः तदुत्तरासद्भ्यः स्वाहा, सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्य उपरिसद्भ्यो दुस्वद्भ्यः स्वाहा। इति मूलनक्षत्रमन्त्रः। ॐ पूषं तव व्रते वयं नरिष्येम कदाचन। स्तोतारस्य इह स्मसि स्वाहा। इति रेवतीनक्षत्रमन्त्रः। ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथ्वीमनु। येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहा। इत्याश्लेषानक्षत्रमंत्रः। ॐ स जोषाऽइन्द्र स गणो मरुद्भिः

१४

प्रत्येक को देवे। अश्विनी नक्षत्र का मंत्र 'ॐ अश्विनौ भैषज्येन०' है। 'ॐ पितृभ्यः स्वधा०' यह मघा नक्षत्र का मंत्र है। 'ॐ एष ते निर्ऋते०' यह मूल नक्षत्र का मन्त्र है। 'ॐ पूषं तव व्रते०' यह रेवती नक्षत्र का मंत्र है। 'ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो०' यह आश्लेषा नक्षत्र का मन्त्र है। 'ॐ स जोषाऽइन्द्र'

मू. शा. भा. टी.

पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँरप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा। इति ज्येष्ठानक्षत्रमन्त्रः। *अथ स्विष्टकृद्धोमः।* ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। ततः संश्रव-प्राशनम्। पुनराचम्य पूर्णपात्रं दद्यात्। ॐ अद्येत्यादिवाक्यं स्मृत्वा, कृतैतद्धोमकर्मणि कृताऽकृतावेक्षणरूप-ब्रह्मकर्मप्रतिष्ठापनार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतं ब्रह्मणे सदक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति दक्षिणां दद्यात्, स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु। इति पवित्रं गृहीत्वा, शिरः सम्मृज्य, दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु यो ऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः।। इति प्रणीतापात्रं न्युब्जी कुर्यात्। तत आस्तरणक्रमेण

१५

यह ज्येष्ठा का मंत्र है। जिस नक्षत्र के द्वारा गण्डान्त दोष उपस्थित हुआ हो उस नक्षत्र के मन्त्र से उस शान्ति कर्म का प्रधान देवता मानकर हवन-पूजन विशेष रूप से करें। यों तो हवन-पूजन सत्ताइसों नक्षत्रों का होता ही है। इसके बाद स्विष्टकृत् होम कर संस्रव प्राशन करे फिर आचमन करे। संकल्प कर पूर्णपात्र ब्रह्मा को देवे। पवित्र द्वारा प्रणीता के जल से मार्जन कर पवित्र अग्नि

बर्हिरानीय घृतेनाऽभिघार्य्य हस्तेनैव जुहुयात्। ॐ देवा गातु विदो गातु वित्वा गातुमित। मनसस्पत इमं देव यज्ञं स्वाहा वातेधा स्वाहा।। ततः क्षेत्रपालादिभ्यो बलिं दद्यात्। दधि-तण्डुल-माषसहितं बलिम्। इन्द्रमुद्दिश्य इदं पठेत्–भो इन्द्र! साङ्गाय सपरिवाराय सवाहनाय सपार्षदाय दधि-तण्डुल-माषादि-सहितं बलिं गृहाण, दीपेन पश्य, यजमानं सपत्नीकं सबालकं रक्ष चाऽस्मदभ्युदयं कुरु, इत्युक्त्वा, इदमाचमनं तुभ्यं नमः, इत्युक्त्वा तत्राऽऽचमनजलं त्यजेत्। एवं सर्वत्र वाक्यं कर्तव्यम्। अग्नये यमनिर्ऋतये वरुणाय वायवे कुबेराय अनन्ताय ईशानाय तत्राऽऽचमनार्थं

में छोड़ दे, प्रणीता को टेढ़ी कर दे फिर आस्तरण के क्रम से कुश लेकर घी में भिगो कर हाथ से ही 'देवा गातु' इस मन्त्र से हवन करे। इसके बाद क्षेत्रपालादिकों को दही, भात एवं उड़द की दाल द्वारा बलि प्रदान करे। जैसे, इन्द्र को उद्देश्य कर बलिदान देते समय कहे कि, हे इन्द्र! आप अंगों, परिवारों, वाहनों तथा अपने पार्षदों सहित 'दही, भात, उड़द की बलि' ग्रहण कीजिए तथा इस दीपक से देखिये और बालक तथा पत्नी के सहित यजमान की रक्षा कीजिये और हम लोगों का अभ्युदय कीजिये। ऐसा कहकर आचमन का जल छोड़ दे। इसी प्रकार किसी की भी बलि के समय कहे। अग्नि, यम, निर्ऋति, वायु, कुबेर, ईशान तथा अनन्त के लिये आचमन का जल और जलता हुआ

सर्वेभ्यो जलं ज्वलद्दीपं च दद्यात्। मृण्मयपात्रे पत्रपुटके वा दधिमाषान्नं सिन्दूरं जलदीपद्रव्येण बलिं प्रकल्प्य, यजमानशरीरं भ्रामयित्वा–यानीह भूतानि वसन्ति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्। अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु क्षमन्तु ते चैव नमोऽस्तु तेभ्यः।। अनेन मन्त्रेण ब्राह्मणहस्तेन प्रस्थापयेत्।

क्षेत्रपालदीपसङ्कल्पः – ॐ अद्येत्यादि वाक्यं स्मृत्वा, अस्मिन् हवनयज्ञे यज्ञफललुम्पक-निवारणार्थं यज्ञप्रतिष्ठासिध्यर्थम्, अमुं दीपबलिं क्षेत्रपालाय दातुमहमुत्सृजे। ततो गोदानम् , नारिकेल-बदरीफल-पत्र-पुष्पाक्षत-घृतैः यजमानः, आचार्य-दक्षिणहस्तस्पृष्टस्रुवेण पूर्णाहुतिं

दीप प्रदान करे। इसके बाद मिट्टी के पात्र अथवा दोने में दधि, माषान्न तथा सिन्दूर एवं प्रज्वलित दीप और द्रव्य को ले बलि की कल्पना कर यजमान के ऊपर चारों ओर घुमाकर 'यानीह०' से लेकर 'नमोऽस्तु तेभ्यः' तक पढ़कर इस मन्त्र द्वारा ब्राह्मण के हाथ से क्षेत्रपाल को संकल्प पूर्वक बलि दिलावे। इसके बाद गोदान करावे, पश्चात् यजमान नारियल, बदरी फल, पत्र, पुष्प, अक्षत तथा घृत ले आचार्य के दाहिने हाथ से स्रुव द्वारा स्पर्श करा कर पूर्णाहुति

कुर्यात्। ॐ मूर्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽआजातमग्निम्। कविठं. सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा। ततः स्रुवेण भस्माऽऽनीय, ललाटादौ त्र्यायुषं कुर्यात्। ततो भूतबलिं दद्यात्। ॐ अद्य स्वकर्मकाश्च ये भूताः प्रेतादिभाः स्थिताः प्रसन्नाः परितुष्टाश्च ते गृह्णन्तु इमां बलिम्। *अथ छायादानम्*– छायादानं कांस्यपात्रं पलैः षोडशभिर्बुधैः। घृतपूर्णं च दातव्यं गण्डदोषोपशान्तये।। तत्र मन्त्रः। आज्यस्त्वं सर्वदेवानां प्रियः स्वस्तिकरः शुचिः। त्वयि संक्रान्तबिम्बोऽयं बालो मूलर्क्षसम्भवः।। सर्वदोष-परित्यक्तो जायतां निरुपद्रवः।। ततोऽपमृत्युशमनार्थं छायादानं दत्त्वा, बालकस्य मुखावलोकनं कुर्यात्। तत्पश्चात् गोमुखप्रसवं कुर्यादापोहिष्ठादिमार्जितः।। ॐ देवस्य त्वा

करें। 'ॐ मूर्धानं' यह पूर्णाहुति मन्त्र है। इसके बाद स्रुव से त्र्यायुष करे। 'ॐ अद्य स्वकर्मकाश्च ये भूताः' इससे भूतों के लिये बलि दे। इसके बाद छाया दान करे। पिता काँसे के पात्र में घी भर कर बालक का मुख 'आज्यस्त्वं' इस मंत्र से देख पात्र को ब्राह्मण के लिये दे देवे। इसके बाद बालक का मुख देखे। इसके बाद गोमुख प्रसव करे। इस क्रिया को पहले ही कर लेना चाहिये। फिर जहाँ की जैसी चाली हो

सवितुरश्विनो भैषज्येन शिरो मे जिह्वा मे बाहू मे पुष्टिर्मे, तुष्टिर्मे, नाभिर्मे, गावः कामप्रदातारो गावो लोकस्य मातरः। गोमुखान्निःसृतो बालो गोमुखश्वासमार्जितः।। पुनर्जातम् इति ध्यायन् वंशपात्रद्वयाम्बरात्। गृहीत्वा बालकं पश्चादापोहिष्ठादिमार्जितम्।। अभिषिक्तस्ततो बालो मूलगण्डान्तसन्धयः। सर्वदोषपरित्यक्तो जायते निरुपद्रवः।। तां गां दद्यात् प्रयत्नेन कम्बलं च द्विजातये। प्रतिमां च ततो दद्यादाचार्याय समाहितः।। अथ चतुःकलशजलेन यजमानं सपत्नीकं सबालं चाभिषिञ्चेदाचार्यः। तत्र मन्त्रः। सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ये च वृद्धाः पुरातनाः। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्राश्च साध्याश्च समरुद्गणाः।। आदित्या

करे। इसका विधान यह है कि, आचार्य श्वेत अष्टदल कमल बना १२८ मुट्ठी धान्य अथवा यथाशक्ति धान्य रखकर उसके ऊपर बाँस का सूप अथवा कुछ बड़ी डलिया रखे, उसमें तिल तथा कुश फैला उसके ऊपर लाल कपड़े अथवा कम्बल बिछा बालक को पूर्व मुख सुला दे फिर बच्चे के समीप गौ का मुख लगाकर प्रसव की भावना करे अर्थात् यह बालक गौ के मुख से उत्पन्न हुआ है ऐसा समझे। फिर पञ्चगव्य से बालक का सिंचन करे। 'ॐ देवस्य त्वा' से लेकर 'गोमुखश्वासमार्जितः' तक पढ़े। पश्चात्

वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सनातनाः। लोकपालाः प्रयच्छन्तु मङ्गलानि श्रियं यशः।। अश्विनौ चाऽभिषिञ्चन्तु देवास्त्वदितिदेवताः। सिद्धिः सरस्वती लक्ष्मीः कीर्तिर्मे या धृतिः प्रिया।। सिनीवाली कुहूश्चैव कद्रूश्च विनता तथा। नक्षत्राणि मुहूर्तानि अहोरात्राणि सन्धयः।। संवत्सरा दिनेशाश्च कलाः काष्ठाः क्षणाः लवाः। सप्तैते ऋषयश्चैव सागराः सुदृढव्रताः।। मरीचिरत्रिश्च्यवनः पुलस्त्य-क्रतुरङ्गिराः। भृगुः सनत्कुमारश्च सनकश्च सनन्दनः।। सनातनश्च दक्षश्च योगिब्रह्मर्षयोऽमलाः। जाबालिः कश्यपो धौम्यो विष्णुश्चैव सनातनः।। दुर्वासाश्च ऋषिश्रेष्ठः कण्वः कात्यायनस्तथा। मार्कण्डेयो दीर्घतमः शुनःशेपः सुलोचनः।। वसिष्ठश्च महातेजा विश्वामित्रः पराशरः। द्वैपायनो भागुरिश्च देवराजो धनञ्जयः।। एते चाऽन्ये च ऋषयो देवव्रतपरायणाः। सशिष्यास्त्वमभिषिञ्चन्तु सादराः सुमहाव्रताः।। पर्वतास्तरवो बल्यः पुण्यान्यायतनानि च।

मू. शा. भा. टी. २०

ऐरावतादयो नागाः सप्तसप्तहयाः शुभाः।। एते चान्येऽपि च वराः सुराः सम्पद्विवर्द्धनाः। योऽसौ वज्रधरो देव आदित्यानां प्रभुर्मतः।। सहस्रनयनः शक्रो मूलदोषं व्यपोहतु। मखं यः सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युतिः।। उक्तनक्षत्र-सम्भूतमग्निदोषं व्यपोहतु। यः साक्षी सर्वभूतानां महामहिषवाहनः। उक्तनक्षत्रसम्भूतां यमः पीडां व्यपोहतु।। निर्ऋतिः कौणपो देवः प्रलयानल-सन्निभः। खड्ग-व्यग्रोऽसिभीमश्च ऋक्षदोषं व्यपोहतु।। प्राणरूपो हि लोकानां सदा कृष्णमनः प्रियाः। पवनो मूलसम्भूतां पीडां सर्वां व्यपोहतु। योऽसौ निधिपतिर्देवः खड्गशूलगदाप्रियः।। उक्तनक्षत्रसम्भूतमग्निदोषं व्यपोहतु। उक्त-नक्षत्रजां पीडां धनदोऽत्र व्यपोहतु। वृषभध्वजः शूलधरो भवानीपतिदेवताः। बालनक्षत्रजां पीडां स नाशयतु शङ्करः।

मू. शा. भा. टी. २१

बालक को उठा ले और 'आपोहिष्ठा' आदि मंत्र से मार्जन करे। फिर गौ और कम्बल तथा स्वर्णनिर्मित मूल पुरुष आचार्य को देवे। इसके बाद चारों कलशों के जल से बालक सहित सपत्नीक यजमान का अभिषेक क्रमशः करे। 'सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु' से लेकर 'ब्रह्मा-विष्णवर्क-युक्तानि सर्वपापं

त्रैलोक्ये यानि भूतानि जङ्गमस्थावराणि च। ब्रह्मा-विष्ण्वर्क-रुद्रकानि सर्वपापं हरन्तु वै।। इति मन्त्रेण दम्पतिं शिशुं चाऽभिषेचयेताम्। ततो ब्राह्मणाय भूयसीं दक्षिणां दद्यात्। तिलकं मन्त्रदानं ग्रह-विसर्जनम्। यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्टकार्यस्य सिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।

इति मूलशान्तिविधिः समाप्तः। ❐

हरन्तु वै' यहाँ तक पढ़े। इसके बाद ब्राह्मणों को भूयसी दक्षिणा दे। तिलक और देवताओं का विसर्जन करे। 'यान्तु देवगणाः' इस मन्त्र को पढ़े। तत्पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन करावे फिर बन्धु-बान्धवों के साथ स्वयं भी भोजन करे। अथवा जहाँ की जैसी प्रथा हो वैसा करे। ❐

पुस्तक प्राप्ति-स्थान–

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी–२२१००१

मुद्रक–*भारत प्रेस,* कचौड़ीगली, वाराणसी–१

हमारे यहाँ की प्रकाशित पुस्तकें एक बार मँगाकर अवश्य पढ़ें।

श्री सूक्त-पुरुषसूक्त भाषाटीका	१२)	श्रीमद्भगवद्गीता भाषा	२५)	रसराजमहोदधि पाँचों भाग	२००)
श्रीसूक्त-पुरुषसूक्त-लक्ष्मीसूक्त मूल	२)	सुखसागर भाषा मध्यम	२००)	स्वास्थ्य का सर्वविध उदय	५)
शिवपुराण भाषा बड़ा	२००)	सुखसागर भाषा गुटका	१००)	बृहत्पाराशरहोराशास्त्र भा.टी.	२००)
शिवपुराण भाषा गुटका	१००)	श्रीमद्देवी भागवत भा.टी. साँची	६००)	मानसागरी भाषा टीका	१००)
चाणक्यनीतिदर्पण भाषा टीका	१५)	महाभारत दोहा-चौपाई में (सबलसिंह चौहान कृत)	१५०)	जातकाभरण भाषा टीका	७५)
स्वप्न विज्ञान	८)	दुर्गार्चन-पद्धति भाषा टीका	१००)	बृहज्ज्योतिषसार भाषा टीका	६०)
रामायण मध्यम भाषा टीका	२००)	दुर्गासप्तशती भा.टी. सजिल्द	६०)	ताजिक नीलकण्ठी भाषा टीका	६०)
रामायण मूल दोहा-चौपाई बड़ा	७५)	दुर्गासप्तशती भाषा टीका	२५)	कर्मविपाक संहिता भाषा टीका	६०)
सुन्दर काण्ड गुटका	८)	दुर्गासप्तशती भाषा	२०)	भाव कुतूहल भाषा टीका	६०)
सुन्दरकाण्ड बड़ा लाल अक्षर	१५)	दुर्गासप्तशती मूल गुटका	२०)	मुहूर्तचिन्तामणि भाषा टीका	५०)
वाल्मीकीय रामायण भाषा	२००)	दुर्गाकवच भाषा टीका	१०)	लघुसंग्रह भाषा टीका	५०)
अध्यात्म रामायण भाषा टीका	१५०)	दुर्गा रामायण	१०)	लग्नचन्द्रिका भाषा टीका	४०)
आनन्द रामायण भाषा	२००)	गणेश सहस्रनाम भाषा टीका	२५)	घाघ-भड्डरी की कहावतें बड़ा	२०)
राधेश्याम रामायण छोटा	४०)	मन्त्र-सागर भाषा टीका	७५)	विश्वकर्मा प्रकाश भाषा टीका	६०)
प्रेमसागर	६०)	वाञ्छाकल्पता भाषा टीका	३०)	स्त्री जातक भाषा टीका	२५)
श्रीमद्भागवत भाषा टीका-साँची	५००)	बगलोपासनपद्धति-बगलामुखी-रहस्य भाषा टीका	४०)	चमत्कार चिन्तामणि भाषा टीका	८)
				होड़ाचक्र भाषा टीका	३)

२३